

中國曲故說部

辛
夷

●
上
●

山西人民出版社

079925

中國古典詩歌

辛夷上

中国典故说粹(上、下册)

辛 夷

*

山西人民出版社出版 (太原并州北路十一号)

山西省新华书店发行 山西省七二五厂印刷

*

开本：850×1168 1/32 印张：36.125 字数：850千字

1987年7月第1版 1987年7月太原第1次印刷

印数：1—9,000册

*

书号：7088·1441 定价：(上、下册)9.30元

GF/36/32

序 言

在我国古代浩繁的典籍中，记载保存着无数的典故，这些典故的形成，是在我国悠久文化发展中逐渐陶冶出的文学和语言学领域中的一种灿烂艺术结晶。虽然有些典故随着历史的发展和社会的变迁，已经显得陈旧、僵化或腐朽；但许许多多至今仍充满活力，闪耀着光辉，不失其宝贵的艺术价值。

从典故的使用意义说，自魏晋以后，特别是到了南北朝时期，诗文用典之风充斥文坛。这种“词不贵奇，竞须新事”（钟嵘《诗品序》），“彩丽竞繁，而兴寄都绝”（陈子昂《与东方左史虬修竹篇序》）的形式主义颓风，尽管是不值得提倡的，然而我们却通过古人所着意贬斥的此种不良倾向，看到了补假用事这一文学现象方兴未艾。这影响波及于后世，唐诗、宋词、元曲以至明清小说，大量使用典故作为一种艺术表现手段，达到了繁荣昌盛的境地。迨到晚清及近代，文人墨客，诗歌吟咏，采摘典故，仍相沿习。就是到了现代，无论革命烈士的慷慨悲歌，或是革命领袖的高旨宏词，乃至著名诗人的怀响之弹，亦不乏用事之例。由此可见，典故的使用价值在文学艺术领域中也是不可忽视的。

适当地恰当地使用典故，对于增强艺术表现力的积极意义是不应否认的。典故用得适当，用得活，不仅能使文章的思想内涵

博雅深厚，意趣幽远；而且手法比喻含蓄，更觉耐人寻味，增强了艺术效果。

在我国文学宝库里，不乏这样的范例。象唐朝的李商隐，往往能结合现实生活和诗人自己的情兴，把典故加以改造，别出心裁，给人以新鲜感，引起读者许多联想。他有一首《莫愁》诗这样写道：“雪中梅下与谁期，梅雪相兼一万枝。若是石城无艇子，莫愁还是有愁时。”莫愁典故的本意，原是石城歌女莫愁划着小艇子愉快地去同爱人相会，本没有什么“愁”的；而诗人所要表达的是爱情失意时的愁怀，于是笔锋一转反问道：若是石城没有小船，莫愁便去不成了，那时她岂不也就有了如同我此刻一样的愁绪了吗？这个典故用得多么自然巧妙啊！

毛泽东同志有一首《水调歌头·游泳》词，下半阙有这样几句：“更立西江石壁，截断巫山云雨，高峡出平湖。神女应无恙，当惊世界殊。”在这里，诗人以伟大的胸襟和奇妙的想象，一反宋玉《高唐赋》中“高唐梦”和《神女赋》中容服媚丽，儿女柔情的庸俗情调，抛弃历代文人使用这一典故的俗套，别出新意，非同凡响。西江，即指长江。在雄奇险峻的长江三峡上截流筑坝，平湖立见，这是怎样的奇伟壮观啊！诗人不禁又想到那位幽栖的神女，于是以幽默的口吻，表达出对她的关怀问讯；进而推想面对祖国日新月异的巨变，神女一定会为之惊叹不已的。这样健康新颖的意趣，这样生动活泼的修辞，这样引人入胜的意境，这样纯熟自然的手法，在典故的使用上真可谓化腐朽为灵奇的妙笔！又如朱德同志《赠友人》诗：“北华收复赖群雄，猛士如云唱大风。自信挥戈能退日，河山依旧战旗红。”诗人借汉高祖刘邦作《大风歌》的典故，用以讴歌我党领导下保卫祖国四方云集的英雄健儿，第三句语意双关，既用鲁阳拗戈反日的典故，以比喻改天换地的英勇壮举；又具体指明打败日本帝国主义，从

而赢得中华民族的解放。真是信手拈来，用得贴切自然，可称天衣无缝。叶剑英同志有一首题为《游大连棒槌岛》的七律，其中有“赤道雕弓能射虎，椰林匕首敢屠龙”之句。诗人在这里突破“射虎”和“屠龙”本事的窠臼，不落俗套，巧妙构思，满怀激情地歌颂了被压迫民族被压迫人民敢于向恶势力挑战，坚决打击帝国主义侵略者的豪迈壮举，真可谓把典故用活了。至于董必武同志《重庆办事处五周年纪念》诗：“曾闻郑国驱狂狗，莫讶韩生笑沐猴”，《闻杜斌丞先生在西安遇害，为长句吊之》诗：“当路芳兰宁有幸？噬人瘦狗竟无知。”在驾驭运用典故方面亦有独到之处。这里便不一一举例了。

当然，我们这样说绝不是提倡过多地不适当当地用典。在我国文学史上，也曾有过极端倾向，宋朝的黄庭坚“搜猎奇书，穿穴异闻”（刘克庄《江西诗派小序》），“专求古人未及之事”（魏泰《临汉隐居诗话》），主张为诗文要“无一字无来处”，“虽取古人之陈言入于翰墨，如灵丹一粒，点铁成金”（黄庭坚《答洪驹父书》）。这是毫无生气毫无创造性的拼凑堆砌，是一条令人窒息的形式主义死路。

既然古代的典故浩若繁星，历代文人取事用典又连篇累牍，那末，研究并掌握古代典故，对于阅读我国古典文学作品，对于古典文学教学工作，对于促进文学创作的提高都有一定的现实意义。

典故的查阅较一般词汇成语为困难，这主要是因为，第一，没有编纂科学、便于翻检的专门工具书以供使用；第二，现代词书中收录的典故有限，且限于篇幅，仅能断章断句简要摘引，读者只能略知大概，倘若了解来龙去脉，还得查阅古书；第三，古代类书虽引录浩繁，但门类庞杂，无有科学的编排以供检索，更无标点注释例句帮助领略内容含义，以至使这样极有价值的百科

全书束之高阁，很少有人问津。

这本书的编写，便是基于上述种种想法所作的一次初步尝试。本书选取常用的不常用的和虽较生僻但有一定典型意义的典故一千三百二十九条，逐条从出典、原文、注释、解说、用法、例句等几个方面加以叙述，以期为读者提供一点方便。为了使读者对某个典故有一个比较完整的概念，在引录或叙述典故的内容时，尽量注意到来龙去脉及故事的完整性，以避管中窥豹之嫌。为了方便阅读，领会难疑，编写采取了随文夹注的办法。为了丰富内容，便于参考，对于一典两出或多出，时或并录。对于不同版本文句之参差，也适当作了一些比较，择善而从，一般不作注明，以避校勘之繁琐。

这本书从收集资料到集中撰写，已逾十年。冬寒抱炉，室无余温；夏夜蚊雷，慨然自奋。在幽静深邃的古籍园林中，陶冶情兴，徘徊漫步，信意摘取了一些锦芳翠羽，珍爱地把它们收藏在我的书箧之中，算是一点收获。然后又不揣鄙陋，冥思苦索，一劙蕙茝，名之为《中国典故说粹》。

由于编写者能力微薄和某些条件的限制，本书可能存在着不少缺点或错误，希望前辈师长及广大读者不吝赐教，以帮助再作修改提高。

辛 夷
一九八六年一月于太原

编例

一、本书共选典故一千三百二十九条，以条目首字音节第一字母，按汉语拼音字母顺序，分为二十三部。

二、每部中，以条目首字笔画多少为序。

三、同部中，首字相同的条目排列在一起，其先后次序，就第二字起按笔画多少、音节第一字母、韵母音序（以《新华字典》音序表为准）、韵母声调次序，依次就其一个方面，找出区别，进行排列。

四、同部中，条目首字不同，但笔画相同时，先按该字韵母顺序排列，如韵母也相同，则按韵母声调次序排列，如韵母声调仍相同，可照第三条规定的四个方面与办法，加以区分排列。

五、同部中，一些首字相同的条目与另一些首字相同的条目，若其首字的笔画、韵母、韵母声调都相同但字不同时（如羊公鹤、羊羹壶餐与阳盱息洪、阳春白雪），也可参照第三条规定的四个方面与办法，找出区别，酌情决定其先后。

条 目 表

A

| | |
|------------|---|
| 安期舄 | 1 |
| 阿香车 | 2 |
| 哀丝豪竹 | 3 |
| 哀家梨（哀梨蒸食） | 3 |
| 哀鸿 | 4 |
| 哀毁骨立（鸡骨支床） | 5 |
| 爱妾换马 | 5 |
| 爱媵贱女 | 6 |
| 敖游 | 7 |
| 暗渡陈仓 | 9 |

B

| | |
|------|----|
| 八斗才 | 11 |
| 八阵图 | 12 |
| 比干剖心 | 13 |

| | |
|-------------|----|
| 比肩人 | 13 |
| 不入虎穴，焉得虎子 | 14 |
| 不见睫毛（目论） | 15 |
| 不为五斗米折腰（折腰） | 15 |
| 不因人热 | 16 |
| 不材之木（樗栎不材） | 17 |
| 不言禄 | 18 |
| 不食周粟（采薇） | 18 |
| 不越雷池 | 20 |
| 白云苍狗 | 21 |
| 白云亲舍 | 21 |
| 白云歌 | 22 |
| 白龙鱼服 | 23 |
| 白鸟之讦 | 24 |
| 白头吟 | 25 |
| 白玉楼成 | 26 |
| 白衣尚书 | 27 |
| 白鱼入舟 | 28 |
| 白虹贯日 | 28 |

| | | | |
|------------------------|----|------------|----|
| 白眉马良 | 30 | 抱冰公事 | 52 |
| 白狼衔衣 | 30 | 抱冰握火 | 52 |
| 白堕鹤觞 | 31 | 抱佛脚 | 53 |
| 白猿剑术 | 32 | 抱瓮 | 54 |
| 半部论语 | 33 | 抱树泣 | 55 |
| 北门锁钥 | 34 | 抱柱信 | 55 |
| 北群空 | 35 | 杯弓蛇影 | 56 |
| 布帆无恙 | 35 | 奔月 | 57 |
| 百尺楼(求田问舍、元龙高 卧、上下床) | 36 | 变羊 | 58 |
| 百里才 | 37 | 表里山河 | 59 |
| 毕万昌大 | 38 | 拜下风 | 60 |
| 毕卓盗饮 | 39 | 拜井出泉 | 61 |
| 冰山 | 40 | 拜石(米颠拜石) | 62 |
| 冰合流澌(冰坚可度) | 41 | 背城借一 | 62 |
| 冰肌玉骨 | 41 | 炳烛之明(炳烛) | 63 |
| 报竹平安 | 43 | 班荆道故 | 64 |
| 报恩珠 | 43 | 班姬辞辇 | 65 |
| 别无长物 | 44 | 班姬题扇 | 66 |
| 补天手 | 45 | 编蒲 | 67 |
| 步步生金莲 | 45 | 博士买驴(三纸无驴) | 67 |
| 拔帜易帜 | 46 | 博浪沙 | 68 |
| 拔葵去织 | 47 | 碑生金 | 68 |
| 拔薤 | 48 | 碧玉破瓜 | 69 |
| 拔藩(义里) | 49 | 碧纱笼诗 | 70 |
| 抱木死 | 49 | 褒姒笑(烽火戏诸侯) | 71 |
| 抱石沉河 | 51 | 壁上观 | 72 |
| | | 辩日 | 73 |

| | |
|------|----|
| 辩折田巴 | 73 |
| 髀肉复生 | 75 |
| 臂血书衣 | 75 |
| 鞭尸 | 76 |
| 鞭石出血 | 77 |

C

| | |
|-----------|----|
| 长风破浪 | 79 |
| 长安米贵 | 80 |
| 长林丰草 | 81 |
| 长枕大被 | 81 |
| 长绳系日 | 82 |
| 尺二秀才 | 83 |
| 尺布斗粟 | 84 |
| 叱石成羊 | 84 |
| 尘饭涂羹 | 86 |
| 臣靡兴夏 | 86 |
| 成也萧何，败也萧何 | 88 |
| 池中物（蛟龙云雨） | 89 |
| 充闾之庆 | 89 |
| 苍头特起 | 90 |
| 沧海桑田 | 91 |
| 苌弘化碧 | 92 |
| 沉舟侧畔千帆过 | 93 |
| 沉鱼落雁 | 94 |
| 赤县神州 | 94 |

| | |
|---------------|-----|
| 吹火照书 | 95 |
| 吹气胜兰 | 95 |
| 吹笙凤鸣（凤吹、王乔升仙） | 96 |
| 采薪之忧（含“负薪之忧”） | 97 |
| 厕枣 | 98 |
| 钗飞（玉燕钗） | 98 |
| 齿亡舌存（舌存） | 99 |
| 杵臼之交 | 100 |
| 垂缰之报 | 101 |
| 刺山飞泉 | 102 |
| 刺股 | 103 |
| 草木皆兵 | 104 |
| 尝秽 | 105 |
| 尝粪 | 105 |
| 城门失火，殃及池鱼 | 107 |
| 城下之盟 | 108 |
| 春月柳（王恭柳） | 108 |
| 豺狼当路（埋轮） | 109 |
| 乘车入鼠穴 | 110 |
| 乘龙 | 111 |
| 乘鳆（双鳆、鳆舄） | 111 |
| 乘兴而来，兴尽而返 | 112 |
| 乘黄鹤（黄鹤） | 113 |
| 乘鸾 | 114 |
| 乘槎（星槎） | 115 |

| | |
|-----------------|-----|
| 俎魔触树 | 116 |
| 莼羹鲈脍（莼鲈之思） | 118 |
| 彩凤随鸦 | 119 |
| 彩鸾配 | 119 |
| 曹娥投江 | 120 |
| 唱大风（大风歌） | 121 |
| 唱筹量沙 | 122 |
| 曾经沧海难为水 | 123 |
| 掣肘 | 124 |
| 程门立雪（含“立 雪”） | 124 |
| 程姬之疾 | 126 |
| 楚弓楚得 | 126 |
| 楚囚南冠（南冠、楚 奏） | 127 |
| 楚虽三户，亡秦必楚 | 128 |
| 楚幕有鸟 | 129 |
| 楚腰 | 130 |
| 雌雄风 | 130 |
| 餐流霞 | 131 |
| 操刀伤锦 | 132 |
| D | |
| 丁公凿井 | 134 |
| 丁公藤 | 135 |
| 丁兰刻母 | 135 |

| | |
|------------------|-----|
| 大义灭亲 | 136 |
| 大斗出，小斗入 | 138 |
| 大未必佳 | 139 |
| 大事不糊涂 | 140 |
| 大树将军 | 141 |
| 斗酒只鸡 | 141 |
| 打鸭惊鸳鸯 | 142 |
| 东山起 | 143 |
| 东市朝衣 | 144 |
| 东施效颦 | 145 |
| 东食西宿（两袒） | 146 |
| 东陵瓜 | 146 |
| 东野毕之御 | 147 |
| 东窗事发 | 148 |
| 冬日与夏日（冬爱、 赵盾） | 148 |
| 当垆酤酒（文君当垆） | 149 |
| 地崩山摧 | 150 |
| 吊鹤 | 151 |
| 多多益善 | 151 |
| 夺席 | 152 |
| 夺锦 | 153 |
| 呆若木鸡 | 153 |
| 妒妇津（附“妒女 泉”） | 154 |
| 妒花女 | 155 |
| 杜武库 | 156 |

| | |
|-----------------|-----|
| 杜根忍死 | 156 |
| 钓鳌（钓东海、钓鳌客） | 157 |
| 定鼎 | 159 |
| 独占鳌头 | 160 |
| 独步天下 | 160 |
| 倒著接篱 | 161 |
| 倒屣 | 162 |
| 啖鯢鱠 | 163 |
| 盗狗 | 163 |
| 盗柳（官柳、武昌柳） | 164 |
| 盗嫂 | 165 |
| 盗憎主人 | 166 |
| 得鱼忘筌 | 166 |
| 第一流 | 167 |
| 掉书袋 | 167 |
| 断头将军 | 168 |
| 断织（孟母断织、乐羊子妻断织） | 169 |
| 断指 | 170 |
| 断席 | 171 |
| 断袖 | 171 |
| 断齑画粥 | 172 |
| 掇蜂 | 173 |
| 堕泪碑 | 174 |
| 堕甑不顾 | 175 |
| 渡杯 | 175 |
| 渡蚁 | 176 |
| 登龙与御李（含“登龙门”） | 176 |
| 登楼啸（清啸解围、吹笳退敌） | 178 |
| 登瀛洲 | 178 |
| 董龙鸡狗 | 179 |
| 董狐直笔 | 181 |
| 鼎湖龙飞（龙宾取天） | 182 |
| 短辕犊车 | 182 |
| 窦家枝（返金桂枝芬） | 183 |
| 戴鸡佩豚 | 184 |
| E | |
| 二五耦 | 186 |
| 二竖 | 187 |
| 二桃杀三士 | 188 |
| 阿堵物（阿堵） | 189 |
| 恶作剧 | 190 |
| 鹅识讲经 | 191 |
| 鹅鸭谏议 | 192 |
| 鹅笼书生 | 192 |
| 鸚荐（荐鸚、祢鸚） | 193 |
| F | |

| | |
|-----------------|-----|
| 飞奴投书 | 194 |
| 飞将军 | 194 |
| 飞熊入梦 | 195 |
| 飞霜冤(六月飞霜) | 196 |
| 反风灭火 | 197 |
| 反裘负刍(反裘负薪) | 197 |
| 方寸岑楼 | 198 |
| 方寸乱矣 | 199 |
| 分我余光(分光) | 200 |
| 分香卖履 | 201 |
| 分椹 | 201 |
| 风马牛 | 202 |
| 风花随堕(飘茵落溷) | 203 |
| 风声鹤唳 | 204 |
| 丰干饶舌 | 204 |
| 丰城剑合(剑化龙) | 205 |
| 凤毛(含“麟角”) | 207 |
| 凤求凰 | 208 |
| 凤凰池 | 209 |
| 凤歌(楚狂) | 209 |
| 夫人城 | 210 |
| 发书置水 | 211 |
| 冯唐持节 | 212 |
| 伏猎侍郎 | 212 |
| 负米 | 213 |
| 负荆 | 214 |
| 负薪 | 215 |
| 芳兰当路 | 215 |
| 吠日与吠雪 | 216 |
| 佛头著粪 | 217 |
| 芙蓉国 | 218 |
| 范丹投钱 | 218 |
| 范宣洁行(妇无裈) | 219 |
| 范蠡乘舟 | 220 |
| 放龟 | 221 |
| 放麑(含“存麑”) | 222 |
| 非烟染笔 | 223 |
| 宓妃枕(含“凌波”) | 224 |
| 服香升仙(飞仙香) | 225 |
| 封三钱府 | 226 |
| 封姨护花(含“十八姨”) | 227 |
| 封狼居胥 | 228 |
| 复棋(王粲复棋) | 229 |
| 浮瓜沉李 | 229 |
| 浮家泛宅 | 230 |
| 焚山(焚山火) | 230 |
| 焚书坑儒 | 232 |
| 焚砚 | 233 |
| 焚桑蒸龟(老龟不烂、移祸于桑) | 233 |
| 腹中鳞甲 | 234 |

| | |
|-------|-----|
| 腹稿 | 235 |
| 樊姬之德 | 235 |
| 覆水难收 | 236 |
| 覆盆 | 237 |
| 覆巢无完卵 | 237 |
| 覆瓿 | 238 |

G

| | |
|-----------|-----|
| 干将与莫邪 | 239 |
| 公才公望 | 240 |
| 公无渡河(箜篌引) | 241 |
| 公孙弘 | 242 |
| 瓜代 | 243 |
| 瓜蔓抄 | 244 |
| 共工怒触不周山 | 244 |
| 改步改玉 | 245 |
| 肝胆涂地 | 246 |
| 告朔饩羊 | 247 |
| 龟床 | 248 |
| 龟灵(神龟梦) | 249 |
| 龟献 | 250 |
| 涓鱼 | 250 |
| 狗恶酒酸 | 251 |
| 姑妄言之 | 252 |
| 孤雏腐鼠 | 253 |
| 刮目相待 | 254 |

| | |
|----------------------|-----|
| 官渡柳 | 254 |
| 国没成湖 | 255 |
| 故剑(微时故剑) | 256 |
| 挂角 | 256 |
| 挂胆 | 257 |
| 挂冠 | 258 |
| 挂剑(季札剑) | 259 |
| 挂瓢 | 259 |
| 高大阍门 | 260 |
| 高山流水(知音) | 261 |
| 皋鱼之泣(含“树欲 静而风不止”) | 261 |
| 顾曲(曲有误,周郎顾) | 262 |
| 桂林一枝 | 263 |
| 郭巨埋儿 | 264 |
| 割股 | 265 |
| 割炙之报 | 266 |
| 割席 | 267 |
| 割臂盟(啮臂盟) | 267 |
| 感虎渡河 | 268 |
| 管中窥豹 | 269 |
| 管鲍之交 | 270 |
| 灌园 | 271 |
| 鹤雀衔鳣(鳣堂) | 272 |

H

| | |
|------------------|-----|
| 化虎(牛哀化虎)..... | 274 |
| 化鹤..... | 275 |
| 化鹤(化鹤归辽、辽鹤)..... | 276 |
| 火牛阵(追亡逐北)..... | 277 |
| 合浦珠还..... | 278 |
| 红丝选配..... | 278 |
| 红叶题诗(题红)..... | 279 |
| 红芙蓉..... | 281 |
| 红纱系臂..... | 282 |
| 红拂私奔..... | 283 |
| 红泪..... | 283 |
| 后身缘(今身缘)..... | 284 |
| 华亭鹤唳(陆氏冤)..... | 285 |
| 华胥梦..... | 286 |
| 回黄转绿..... | 287 |
| 含饭之恩..... | 287 |
| 含蓼问疾..... | 288 |
| 邯郸学步..... | 289 |
| 怀荆读(画地成池)..... | 290 |
| 怀梦..... | 291 |
| 怀鵠..... | 291 |
| 怀橘..... | 292 |
| 坏陂复陂..... | 293 |

| | |
|------------------------|-----|
| 还金(遗金)..... | 293 |
| 还带..... | 294 |
| 还鲊(封鲊)..... | 296 |
| 呵璧问天..... | 297 |
| 和氏璧(抱璞)..... | 298 |
| 河东狮子吼(季常癖).... | 299 |
| 河伯妇..... | 300 |
| 河汾门下..... | 302 |
| 虎媒..... | 303 |
| 画皮..... | 304 |
| 画灰..... | 305 |
| 画饼..... | 306 |
| 画鬼容易..... | 306 |
| 画眉..... | 307 |
| 画荻..... | 308 |
| 画鹿播(随车致雨、随车雨、雨随车)..... | 308 |
| 虹饮..... | 309 |
| 侯门如海..... | 310 |
| 胡雏长啸..... | 311 |
| 胡僧话劫灰..... | 312 |
| 挥戈反日..... | 313 |
| 挥金陌上..... | 313 |
| 海大鱼..... | 315 |
| 海鸟避鲁门..... | 316 |
| 浩然之气..... | 317 |
| 桓伊三弄..... | 318 |

| | | | |
|---------------------|-----|------------------|-----|
| 涸辙之鲋 | 319 | 击楫中流 | 338 |
| 淮南鸡犬（一人得道， 鸡犬飞升） | 320 | 记事珠 | 338 |
| 黄公酒垆 | 321 | 旧雨与今雨 | 339 |
| 黄犬之叹 | 321 | 纪信蹈火 | 340 |
| 黄台瓜辞 | 322 | 夹袋选才 | 341 |
| 黄羊祭灶 | 323 | 江母亡布 | 341 |
| 黄金台 | 324 | 江花谢草 | 343 |
| 黄钟与瓦釜 | 325 | 江郎才尽（还锦、五 色笔） | 344 |
| 黄袍加身 | 326 | 尽忠报国（精忠报 国） | 345 |
| 黄鹄志 | 326 | 鸡肋（含“鸡肋拳 擅”） | 345 |
| 黄粱梦 | 327 | 鸡鸣狗盗 | 346 |
| 韩寿偷香（偷香） | 328 | 鸡窗 | 347 |
| 韩陵片石（寒山片 石） | 329 | 鸡黍约 | 348 |
| 韩康卖药 | 329 | 歼良 | 349 |
| “寒食”与“温食” | 330 | 坚瓠 | 349 |
| 喙长三尺 | 331 | 抉目悬门 | 350 |
| 毁裤 | 332 | 金穴 | 351 |
| 骸爨 | 332 | 金刚怒目 | 352 |
| | | 金华殿语 | 352 |
| | | 金谷酒数 | 353 |
| 巾帼赠 | 334 | 金昏与瓦巧 | 354 |
| 击瓮 | 335 | 金屋藏娇 | 355 |
| 击贼笏（笏击贼） | 336 | 金莲花炬 | 356 |
| 击筑 | 336 | 金貂换酒 | 356 |

J

| | |
|----------|-----|
| 巾帼赠 | 334 |
| 击瓮 | 335 |
| 击贼笏（笏击贼） | 336 |
| 击筑 | 336 |